• महाकुंभ...

पितृ दोष से छुटकारा

ऐसा माना जाता है कि अगर पितृ नाराज हो जाएं, तो व्यक्ति की कुंडली में पितृ दोष लग जाता है। इसके अलावा, अगर पितरों का अंतिस संस्कार, तर्पण या श्राद्ध सही विधि से न किया जाए, तब भी पितृ दोष लग सकता है। पितृ दोष होने से व्यक्ति को जीवन में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अगर आप भी पितृ दोष से छुटकारा पाना चाहते हैं, तो महाकुंभ का अवसर आपके लिए बहुत शुभ रहने वाला है। अगर आप भी महाकुंभ जाने का मन बना रहे हैं, तो इसके लिए वहां पितृ दोष से मुक्ति के लिए कुछ उपाय किए जा सकते हैं।

▶ **पितृ दोष से मिलेगा छुटकारा**-पितृ दोष से छुटकारा पाने के लिए महाकुंभ के दौरान प्रयागराज में संगम तट के किनारे गंगा स्नान के बाद श्राद्ध कर्म कर सकते हैं। ऐसा करने से पितरों को मोक्ष की मिलता है और पितृ शांत होते हैं, जिससे व्यक्ति को पितृ दोष से राहत मिल सकती है।

▶ **महाकुंभ के दौरान करें ये काम**-धार्मिक मान्यता के अनुसार, महाकुंभ में स्नान करने से व्यक्ति को कई अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है. वहीं, पितृ दोष से मुक्ति के लिए महाकुंभ में स्नान के दौरान थोड़ा-सा गंगाजल हाथ में लेकर पितरों को अर्पित करें और प्रणाम करें। इसके बाद अपनी गलतियों के लिए क्षमा मांगें। ऐसा करने से पितृ दोष से राहत मिल सकती है।

▶ **बरसेगी पितरों की कृपा**-महाकुंभ में स्नान के दौरान सूर्यदेव को जल अर्पित करें और हाथ जोड़कर नमस्कार करें। इसके अलावा, महाकुंभ में आए हुए साधु-संतों की सेवा करें। ऐसा करने से पितृ प्रसन्न होते हैं और अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखते हैं।

▶ **इन चीजों का करें दान**-पितरों की कृपा पाने के लिए अपने सामर्थ्य के अनुसार दान-पुण्य जरूर करना चाहिए. इसके लिए महाकुंभ में स्नान के बाद सोना-चांदी और अन्न का दान कर सकते हैं। साथ ही, आप महांकुभ में गरीब या जरूरतमंदों को गर्म कपड़ों का भी दान कर सकते हैं। इससे पितृ दोष से राहत मिलती है।

• व्रत...

षटतिला एकादशी...

षट्तिला एकादशी माघ महीने में पड़ती है और इस साल यह तिथि 25 जनवरी की है। इस दिन षट्तिला एकादशी का व्रत रखा जाएगा और भगवान विष्णु की विधि विधान से पूजा की जाएगी। षटतिला एकादशी के दिन भक्त छह प्रकार से तिल का उपयोग करते हैं - तिल से स्नान, तिल से तर्पण, तिल का दान, तिल युक्त भोजन, तिल से हवन और तिल मिश्रित जल का सेवन। यह व्रत भगवान विष्णु को प्रसन्न करने और मोक्ष प्राप्ति के लिए किया जाता है। आइए जानते हैं इस व्रत की तिथि कब से कब तक है और साथ ही यह भी देखते हैं कि इस दिन तिल का महत्व क्यों सबसे खास होता है।

वैदिक पंचांग के अनुसार, 25 जनवरी 2025 को षट्तिला एकादशी का व्रत रखा जाएगा। एकादशी तिथि 24 जनवरी शाम 7 बजकर 25 मिनट से शुरू होगी और 25 जनवरी रात 8 बजकर 31 मिनट पर समाप्त होगी। व्रत का पारण 26 जनवरी सुबह 7 बजकर 12 मिनट से लेकर 9 बजकर 21 मिनट के बीच होगा।

▶▶ **तिल का महत्व**-पद्म पुराण के अनुसार, षट्तिला एकादशी पर भगवान विष्णु की पूजा और तिल का भोग महत्वपूर्ण है। इस दिन तिल दान करने से पापों से मुक्ति मिलती है। षट्तिला एकादशी का व्रत रखकर तिलों से स्नान, दान, तर्पण और पूजन किया जाता है। इस दिन तिल का उपयोग स्नान, प्रसाद, भोजन, दान और तर्पण में होता है। तिल के अनेक उपयोगों के कारण ही इसे षट्तिला एकादशी कहते हैं। मान्यता है कि जितने तिल दान करेंगे, उतने ही पापों से मुक्ति मिलेगी।

▶▶ **षट्तिला एकादशी का महत्व**-षट्तिला एकादशी भगवान विष्णु की प्रिय एकादशी तिथियों में से एक मानी जाती है। इसका व्रत रखने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और घर में सुख-समृद्धि आती है। इस व्रत को करने से दरिद्रता और दुखों से मुक्ति मिलती है। यहां तक कि अगर आप व्रत नहीं कर सकते तो सिर्फ कथा सुनने से भी वाजपेय यज्ञ के बराबर पुण्य मिलता है। यह व्रत वाचिक, मानसिक और शारीरिक तीनों तरह के पापों से मुक्ति दिलाता है। इस व्रत का फल कन्यादान, हजारों सालों की तपस्या और यज्ञों के बराबर माना गया है।

▶▶ **षटतिला एकादशी पर 6 तरह से करें तिल का उपयोग**-तिल से स्नान, तिल से तर्पण, तिल का दान, तिल युक्त भोजन, तिल से हवन और तिल मिश्रित जल का सेवन। षटतिला एकादशी पर तिल का इन कामों में प्रयोग करें। मान्यता है कि जितने तिल दान करेंगे, उतने ही पापों से मुक्ति मिलेगी।

माता लक्ष्मी की पूजा शाम के वक्त होती है, ऐसे में जब भी आप इनकी पूजा करें तो शाम का समय ही चुनें। शुक्रवार को स्नान करने के बाद मां लक्ष्मी की पूजा करें।

पूजा से पहले ही जहां आप लक्ष्मी जी की पूजा करेंगे उसे साफ करके शुद्ध कर लें, इसके बाद पूजा शुरु करें। पूजा में माता को गुलाबी रंग के फूल अर्पित करें ऐसा करना शुभ माना जाता है। इसके साथ ही इत्र भी चढ़ाएं...

मां लक्ष्मी करना है प्रसन्न तो करें ये काम

कई बार जीवन में ऐसा होता है कि मेहनत, ईमानदारी और पूरी लग्न से कार्य करने के बाद भी व्यक्ति को कामयाबी नहीं मिल पाती, जिसके वो हकदार होते हैं। करियर हो फिर कारोबार हर तरफ से निराशा ही निराशा मिलती है। सबकुछ ठीक होने के बाद भी भाग्य आपका साथ नहीं दे रहा है तो ऐसे में हो सकता है आपके जाने-अनजाने काम के कारण लक्ष्मी जी नाराज हो। मां लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए शुक्रवार को विशेष उपाय जरूर करें, मान्यता है इससे आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रूप से परेशानियों का अंत होता है। मान्यता है कि अगर माता लक्ष्मी प्रसन्न हो जाएं तो व्यक्ति को धन-धान्य की कमी नहीं रहती है। अगर आप माता लक्ष्मी को प्रसन्न कर लेते हैं तो धन और समृद्धि के सभी रास्ते खुल जाते हैं।

कैसे करें मां की पूजा

● माता लक्ष्मी की पूजा शाम के वक्त होती है, ऐसे में जब भी आप इनकी पूजा करें तो शाम का समय ही चुनें। शुक्रवार को स्नान करने के बाद मां लक्ष्मी की पूजा करें। पूजा से पहले ही जहां आप लक्ष्मी जी की पूजा करेंगे उसे साफ करके शुद्ध कर लें, इसके बाद पूजा शुरु करें। पूजा में माता को गुलाबी रंग के फूल अर्पित करें ऐसा करना शुभ माना जाता है। इसके साथ ही इत्र भी चढ़ाएं।

धन लाभ के लिए शुक्रवार को करें ये उपाय

● **सिक्के का उपाय** - शुक्रवार के दिन एक रुपये का सिक्का लें और उसे अपने मन्दिर में मां लक्ष्मी के चरणों में रखें। विधिवत पूजा पाठ करें। माता लक्ष्मी को फूल, अष्टगंध आदि अर्पित करें और अगले दिन उस सिक्के को उठाकर एक लाल कपड़े में बांधकर अपने पास रख लें। ज्योतिषाचार्य अनीष व्यास के अनुसार शुक्रवार के दिन ये उपाय करने से मां लक्ष्मी घर में वास करती हैं। दुर्भाग्य दूर होता है सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

● **लाल कपड़ा और कौड़ी**- व्यापार नहीं चल रहा, घाटा हो रहा है तो शुक्रवार के दिन अपनी दुकान के कैश बॉक्स या फिर कहें धन रखने वाली आलमारी में लाल कपड़े में पीली कौड़ी बांधकर रख दें। इस पोटली को एक माह तक वहीं रखें रहें, पूर्णिमा और हर शुक्रवार को इसकी पूजा करें। मान्यता है इससे धन आगमन के रास्ते खुलते हैं। कैश बॉक्स का मुंह उत्तर या पूर्व की ओर रखें।

● **मिट्टी कलश-चावल** - शुक्रवार के दिन एक छोटा-सा मिट्टी का कलश लें और उसमें चावल भर दें। इसके बाद चावल के ऊपर एक रुपये का सिक्का और एक हल्दी की गांठ रख दें। फिर इस पर एक ढक्कन लगाकर, मां लक्ष्मी का आशीर्वाद लेकर उसे किसी पुजारी को दान कर दें। मान्यता है कि इससे धन संपदा में बढ़ोत्तरी होती है।

इन तीन कार्यों को करने से बचें

● **उधार लेन-देन :** शुक्रवार के दिन उधार लेन-देन से बचना चाहिए। न किसी को उधार पैसे दें और ना ही किसी से पैसे उधार लें। कहा जाता है कि इस दिन उधार लेन-देन से मां लक्ष्मी रुष्ट हो जाती हैं।

● **किसी को न दें चीनी :** पड़ोसी अक्सर घर से कुछ न कुछ मांगने आ जाते हैं, ऐसे में यदि शुक्रवार के दिन कोई चीनी मांगने आता है, तो उसे चीनी बिलकुल भी न दें। ऐसा करने से शुक्र ग्रह कमजोर हो जाता है। हमारे जीवन में सुख और समृद्धि इसी ग्रह के प्रभाव से आना माना जाता है।

● **इनका न करें अपमान :** वैसे तो हर किसी का सम्मान करना चाहिए। लेकिन जाने अनजाने में भी शुक्रवार के दिन किसी भी महिला, कन्या या किन्नर का अपमान न करें और और ना ही किसी भी तरह के अपशब्द बोलें। मान्यता है इससे मां लक्ष्मी नाराज हो जाती हैं और धन की हानि होती है।

● **घर में न करें गंदगी :** कहते हैं मां लक्ष्मी वहीं वास करती हैं, जहां साफ-सफाई होती है। यही वजह है कि दिवाली के दिन मां लक्ष्मी के पूजन से पूर्व घरों की अच्छे से साफ किया जाता है, जिससे मां लक्ष्मी प्रसन्न होकर घर में वास करें और उनकी कृपा सदैव बनी रही।

■ पं. नित्यानंद

• पूजा...

माघ माह

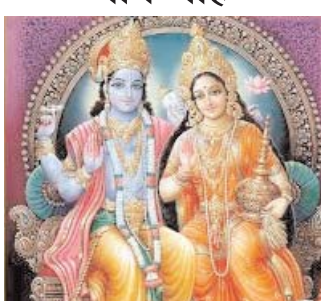

माघ महीने में भगवान विष्णु का पूजन करना चाहिए। इस महीने में भगवान विष्णु का पूजन करना हिंदू धर्म शास्त्रों में बहुत शुभ बताया गया है। इस महीने में भगवान विष्णु का पूजन करने से उनके साथ-साथ मां लक्ष्मी भी प्रसन्न होती हैं और आशीर्वाद प्रदान करती हैं। माघ के महीने अगर कोई व्यक्ति घर आता है, तो उसे भूखा नहीं जाने देना चाहिए। इस महीने में गरीब और जरूरतमदों को भोजन और अन्य चीजों का दान करना चाहिए. ऐसा करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। माघ महीने में सात्विक भोजन खाना चाहिए। पवित्र नदियों में डुबकी लगानी चाहिए। ऐसा करना धार्मिक लिहाज से पुण्य फल देने वाला माना गया है। माघ महीने में तिल और गुड़ खाना चाहिए। तिल और गुड़ गर्म होता है. तिल और गुड़ खाने से सर्द मौसम में शरीर गर्म रहता है। माघ महीने में तिल और गुड़ खाने का धार्मिक महत्व भी है। मान्यता है कि इससे भगवान सूर्य और शनि देव की कृपा मिलती है।

• तुलसी...

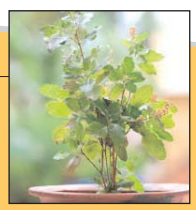

वास्तु शास्त्र में भी तुलसी को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करने वाला पौधा कहा गया है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, जहां पर तुलसी का पौधा लगा होता है और हर दिन उसकी पूजा की जाती है और जल से सींचा जाता है, वहां पर सदैव भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है। ऐसे घरों में कभी भी खुशहाली व धन-धान्य की कमी नहीं होती है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित